अध्याय 6: कर चले हम फ़िदा

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 12 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1	प्रश्न-अभ्यास (क) — निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर	8 प्रश्न
प्रश्नावली 6.2	प्रश्न-अभ्यास (ख) — निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 6.3	भाषा अध्ययन — विशिष्ट प्रयोगों का आशय	1 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1 — प्रश्न-अभ्यास (क) — निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1

क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

हल

हाँ, इस गीत की एक स्पष्ट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है।
यह गीत 1964 में बनी हिंदी फ़िल्म 'हकीकत' के लिए कैफ़ी आज़मी ने लिखा था।
फ़िल्म 'हकीकत' 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित थी।
उस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने हिमालय की चोटियों पर लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी।
इसी युद्ध की वीरगाथा और सैनिकों के बलिदान को इस गीत में व्यक्त किया गया है।
इस प्रकार यह गीत 1962 के भारत-चीन युद्ध से जुड़ा एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ बन गया।

उत्तर: हाँ, यह गीत फ़िल्म 'हकीकत' (1964) के लिए लिखा गया था, जो 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। उस युद्ध में हिमालय की चोटियों पर लड़ते हुए भारतीय सैनिकों ने अपने प्राणों की बलि दी थी।

प्रश्न 2

'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

हल

इस पंक्ति में 'हिमालय' भारत की आन, बान और शान का प्रतीक है।
हिमालय भारत का सिर या मस्तक माना जाता है — वह भारत की प्रतिष्ठा, गरिमा और सम्मान का प्रतीक है।
जब शत्रु ने हिमालय की चोटियों पर आक्रमण किया, तो सैनिकों ने अपने प्राण देकर भी उसे झुकने नहीं दिया।
अर्थात् उन्होंने भारत की राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान की रक्षा की।
हिमालय यहाँ भारत की अपराजेय शक्ति और अखंडता का भी प्रतीक है।

उत्तर: इस पंक्ति में 'हिमालय' भारत की प्रतिष्ठा, गरिमा और राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक है। सैनिकों ने प्राण देकर भी हिमालय (भारत का मस्तक) को शत्रु के सामने नहीं झुकने दिया — अर्थात् देश का सिर ऊँचा रखा।

प्रश्न 3

इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है?

हल

कवि ने लिखा है — 'आज धरती बनी है दुलहन साथियो।'
युद्धभूमि में लड़ते हुए जब सैनिक वीरगति को प्राप्त होते हैं, तो उनका खून धरती पर बिखर जाता है।
सैनिकों के बलिदान से धरती उस प्रकार सज जाती है जैसे कोई दुलहन सजती-सँवरती है।
इसके अलावा सैनिक अपनी मातृभूमि (धरती) से इस प्रकार प्रेम करते हैं जैसे कोई दूल्हा अपनी दुलहन से।
युद्धभूमि में धरती की मिट्टी सैनिकों के रक्त से लाल हो जाती है — जैसे दुलहन लाल जोड़े में सजती है।
इस प्रकार धरती को दुलहन कहकर कवि ने देश-प्रेम और बलिदान के सौंदर्य को व्यक्त किया है।

उत्तर: युद्धभूमि में सैनिकों का रक्त बिखरने से धरती वैसे ही सज जाती है जैसे कोई दुलहन सजती है। साथ ही सैनिक अपनी मातृभूमि से दुलहन जैसा प्रेम करते हैं। इसलिए कवि ने धरती को दुलहन कहा है।

प्रश्न 4

गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह जाते हैं?

हल

गीत में कई ऐसी विशेषताएँ होती हैं जो उन्हें जीवन भर यादगार बना देती हैं—
1. भावप्रवणता: गीत में गहरे और सच्चे भाव होते हैं जो सीधे हृदय को छूते हैं।
2. लय और संगीत: गीत की धुन और ताल उसे मन में बस जाने में मदद करती है।
3. सरल भाषा: गीत की भाषा सरल और हृदयग्राही होती है जो सबकी समझ में आ जाती है।
4. सामूहिक गायन: गीत साथ मिलकर गाए जाते हैं जिससे वे मन में गहरे उतर जाते हैं।
5. जीवन की सच्चाई: जो गीत जीवन के सत्य, देश-प्रेम, या मानवीय भावनाओं को व्यक्त करते हैं वे अधिक प्रभावशाली होते हैं।
6. दोहराव: बार-बार सुनने और गाने से गीत की पंक्तियाँ स्मृति में अंकित हो जाती हैं।

उत्तर: गीत की लयात्मकता, सरल और भावपूर्ण भाषा, सच्ची मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति, और सामूहिक गायन की परंपरा — ये सब मिलकर गीत को जीवन भर याद रहने योग्य बना देते हैं।

प्रश्न 5

कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

हल

कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग मुख्यतः आने वाली पीढ़ी के सैनिकों के लिए किया है।
वे सैनिक जो युद्धभूमि में शहीद हो रहे हैं, वे अपने बाद आने वाले साथी सैनिकों को 'साथियो' कहकर संबोधित कर रहे हैं।
साथ ही इसमें समस्त देशवासियों को भी संबोधित किया गया है — जिन्हें शहीद सैनिक अपना वतन सौंप रहे हैं।
इस संबोधन में एकता, भाईचारा और देश-प्रेम की भावना निहित है।
शहीद सैनिक 'साथियो' कहकर यह संदेश दे रहे हैं कि राष्ट्र-रक्षा का दायित्व अब उनके हाथों में है।

उत्तर: कवि ने 'साथियो' संबोधन का प्रयोग आने वाली पीढ़ी के सैनिकों और समस्त देशवासियों के लिए किया है। शहीद होते सैनिक अपने साथियों को वतन की रक्षा का दायित्व सौंपते हुए यह संबोधन करते हैं।

प्रश्न 6

कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

हल

कवि ने देश की रक्षा और कुर्बानियों के काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है।
कविता में यह पंक्ति है — 'राह कुर्बानियों की न वीरान हो / तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले।'
यहाँ 'काफ़िला' देशभक्त वीरों के उस समूह का प्रतीक है जो देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने को सदा तत्पर रहता है।
शहीद सैनिक अपने साथियों से आग्रह करते हैं कि बलिदान की यह परंपरा अनवरत जारी रहे।
अर्थात् कुर्बानियों का यह सिलसिला कभी रुके नहीं — राष्ट्र-रक्षा के लिए हर पीढ़ी आगे आती रहे।

उत्तर: कवि ने बलिदानी वीरों के काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है। 'तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले' — अर्थात् देश की रक्षा के लिए कुर्बानी देने की परंपरा निरंतर जारी रहनी चाहिए।

प्रश्न 7

इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

हल

गीत में पंक्ति है — 'बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो।'
'सर पर कफ़न बाँधना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है — मृत्यु की परवाह न करते हुए, जान हथेली पर लेकर काम करना।
यह वाक्यांश उन सैनिकों की निर्भीकता और वीरता की ओर संकेत करता है जो जानते हैं कि युद्ध में उनकी मृत्यु हो सकती है, फिर भी वे डरते नहीं।
इसमें यह भाव निहित है कि सैनिकों ने मृत्यु को स्वीकार कर लिया है और वे शहादत के लिए तैयार हैं।
यह वीरता, त्याग और देश-प्रेम की पराकाष्ठा का प्रतीक है।

उत्तर: 'सर पर कफ़न बाँधना' मृत्यु की परवाह न करने और शहादत के लिए सर्वदा तैयार रहने की ओर संकेत करता है। सैनिक जानते हैं कि युद्ध में मृत्यु निश्चित है, फिर भी वे निर्भीकता से आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 8

इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

हल

इस गीत का प्रतिपाद्य (केंद्रीय भाव) देश-प्रेम, वीरता और बलिदान की भावना है।
कवि कैफ़ी आज़मी ने 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में उन सैनिकों की मनोभावनाओं को वाणी दी है जो अपने प्राण न्योछावर करते हुए भी देश की रक्षा करते हैं।

गीत में शहीद सैनिक अपने साथियों को वतन सौंपते हुए कहते हैं कि वे अपनी जान-तन की परवाह किए बिना देश पर फ़िदा हो रहे हैं।

सैनिकों के अनुसार हिमालय की भाँति भारत का सर कभी नहीं झुकना चाहिए।

वे आने वाली पीढ़ियों से अपेक्षा करते हैं कि वे बलिदानियों के काफ़िले को आगे बढ़ाते रहें।

राम-लक्ष्मण के प्रतीकों के माध्यम से सैनिकों को रावण (शत्रु) से देश की रक्षा और सीता (मातृभूमि की मर्यादा) की पवित्रता बनाए रखने का आह्वान किया गया है।

संक्षेप में यह गीत देशभक्ति, वीर-बलिदान और राष्ट्रीय कर्तव्य-बोध का एक अत्यंत प्रभावशाली गान है।

उत्तर: यह गीत देश-प्रेम, वीरता और बलिदान का गान है। 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में कवि ने सैनिकों की उस भावना को व्यक्त किया है जो जान-तन न्योछावर करके भी देश का सम्मान और हिमालय का शीश झुकने नहीं देते, और आने वाली पीढ़ियों को कुर्बानियों का काफ़िला जारी रखने का संदेश देते हैं।

प्रश्नावली 6.2 — प्रश्न-अभ्यास (ख) — निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

साँस थमती गई, नब्ज जमती गई फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

हल

इन पंक्तियों में युद्धभूमि में सैनिकों की असीम वीरता और अदम्य साहस का चित्रण है।
सर्दी और युद्ध की विषम परिस्थितियों में सैनिकों की साँसें रुकने लगीं और नब्ज (नाड़ी) ठंड से जमती जा रही थी।
शरीर शिथिल हो रहा था, प्राण जाते-से लग रहे थे — लेकिन इस सबके बावजूद सैनिकों ने अपने क़दम आगे बढ़ने से नहीं रोका।
मृत्यु के करीब होते हुए भी वे पीछे नहीं हटे — यही उनकी सच्ची वीरता है।
इन पंक्तियों में यह भाव है कि देश-प्रेम और कर्तव्य-निष्ठा शारीरिक कष्ट और मृत्यु के भय से बहुत ऊपर होती है।

उत्तर: अत्यंत कठिन परिस्थितियों में सैनिकों की साँसें रुकने लगीं और नब्ज जमती जा रही थी, फिर भी उन्होंने अपने कदम आगे बढ़ने से नहीं रोका। इन पंक्तियों में सैनिकों के अदम्य साहस और देश-प्रेम की सर्वोच्च भावना का वर्णन है।

प्रश्न 2

खींच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

हल

इन पंक्तियों में सैनिक अपने साथियों से आह्वान करते हैं कि वे अपने रक्त से धरती पर एक ऐसी रेखा खींचें जिसे कोई शत्रु पार न कर सके।
'रावन' यहाँ शत्रु-देश या आक्रांता का प्रतीक है — ठीक उसी तरह जैसे पौराणिक रावण बुराई का प्रतीक था।
रक्त से रेखा खींचने का आशय है — प्राण देकर भी सीमा की रक्षा करना।
यह रेखा भारत और शत्रु के बीच वह सुरक्षा-दीवार है जिसे कोई भी दुश्मन तोड़ न सके।
इन पंक्तियों में देश की संप्रभुता और सीमाओं की रक्षा के लिए अंतिम बलिदान की भावना व्यक्त हुई है।

उत्तर: सैनिक अपने साथियों से आह्वान करते हैं कि वे अपने रक्त से ऐसी रेखा खींचें जिसे कोई शत्रु (रावण) पार न कर सके। इन पंक्तियों में देश की सीमाओं की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने की उच्च भावना व्यक्त है।

प्रश्न 3

छू न पाए सीता का दामन कोई राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो

हल

इन पंक्तियों में राम-सीता-लक्ष्मण के पौराणिक प्रसंग का प्रतीकात्मक उपयोग किया गया है।
'सीता' यहाँ मातृभूमि (भारत माँ) का प्रतीक है जिसकी मर्यादा और पवित्रता की रक्षा करनी है।
'रावन' शत्रु देश का प्रतीक है जो मातृभूमि की अस्मिता को क्षति पहुँचाना चाहता है।
कवि सैनिकों को 'राम और लक्ष्मण' कहकर संबोधित करते हैं — अर्थात् वे ही मातृभूमि की रक्षा करने वाले हैं।

इन पंक्तियों का भाव है कि जिस प्रकार राम और लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए रावण से युद्ध किया, उसी प्रकार सैनिकों को भी मातृभूमि की रक्षा के लिए शत्रु से लोहा लेना है।
यहाँ देश की मर्यादा और स्वाभिमान की रक्षा का संदेश दिया गया है।

उत्तर: इन पंक्तियों में 'सीता' मातृभूमि का और 'रावण' शत्रु का प्रतीक है। कवि सैनिकों को राम और लक्ष्मण के रूप में संबोधित कर उन्हें मातृभूमि की मर्यादा की रक्षा करने का आह्वान करते हैं — जैसे राम-लक्ष्मण ने सीता की।

प्रश्नावली 6.3 — भाषा अध्ययन — विशिष्ट प्रयोगों का आशय

प्रश्न 1

इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत के संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
कट गए सर, नब्ज जमती गई, जान देने की रुत, हाथ उठने लगे

हल

1. कट गए सर —
आशय: सैनिकों के सिर कट गए अर्थात् वे वीरगति को प्राप्त हुए, शहीद हो गए। इसमें देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने का भाव है।
वाक्य प्रयोग: देश की रक्षा में कट गए सर हमारे, पर हमने अपनी मातृभूमि की मान-मर्यादा को आँच नहीं आने दी।

2. नब्ज जमती गई —
आशय: नब्ज (नाड़ी) जमना अर्थात् शीतलहर या घायल अवस्था में शरीर की नब्ज धीमी पड़ने लगना, मृत्यु का निकट आना।
वाक्य प्रयोग: हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों पर युद्ध करते सैनिकों की नब्ज जमती गई, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी।

3. जान देने की रुत —
आशय: 'रुत' का अर्थ है मौसम/अवसर। 'जान देने की रुत' अर्थात् देश के लिए प्राण न्योछावर करने का अवसर — वह क्षण जब देश को सैनिक के सर्वोच्च बलिदान की आवश्यकता हो।
वाक्य प्रयोग: जब देश पर संकट आया तो वीर सैनिकों ने कहा — जान देने की रुत रोज नहीं आती, आज हम इसका सदुपयोग करेंगे।

4. हाथ उठने लगे —
आशय: शत्रु का हाथ मातृभूमि की ओर उठने लगे अर्थात् शत्रु आक्रमण करने का दुस्साहस करे। इसमें देश की अस्मिता पर हमले की ओर संकेत है।
वाक्य प्रयोग: जब भी शत्रु के हाथ हमारी सीमा की ओर उठने लगे, भारत के वीर सैनिक उन्हें तोड़ देने के लिए सदा तैयार रहते हैं।

उत्तर: 'कट गए सर' = शहीद हो जाना; 'नब्ज जमती गई' = प्राण निकलते-से होना; 'जान देने की रुत' = देश के लिए बलिदान का दुर्लभ अवसर; 'हाथ उठने लगे' = शत्रु का मातृभूमि पर आक्रमण करने का दुस्साहस — ये सभी सैनिकों के बलिदान और देश-रक्षा की भावना को व्यक्त करते हैं।